## THE CHILD LABOUR (PROHIBITION AND REGULATION) Bill 1986—contd.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): We will now resume discussion on the Child Labour (Prohibition and Regulation) Bill, 1986. Yes, Mr Kamalendu Bhattacharjee.

SHRI KAMALENDU BHATTA-CHARJEE (Assam): Respected Vice-Chairman, Sir. I stand here to support this Bill Broadly speaking, this Bill has got two objectives Firstly, it seeks to prohibit engagement of children in certain employments. Secondly, it seeks regulate the conditions of work of children in certain other employments. These are the two main objectives of this Bill introduced here.

Sir, there is no denying the fact that the problem of child labour has already assumed menacing proportions. The condition itself is far from satisfactory. While agreeing with the hon. Members of the Opposition, the hon. Member from CPI(M) and the hon. Member from the BJP, while sharing their views and concern about this problem of child labour in India, I would like to appeal to them to take the approach of constructive cism towards this problem and not to go in for destructive criticism. I do belive that they are as much concerned about this problem as I am. I believe their sincerity of approach. I also have full faith in their honesty of purpose. But I would like to be seech them to cooperate with the Government because I for one believe that this problem of child labour in India is going from bad to worse.

Sir, it is true that there are already 15 Acts in this regard and Mrs. Muknerjee has very lightly pointed out and has drawn the attention of the Government to the fact that there are already 15 Acts on this matter and why should threre be necessity of having one more and instead there should be some comprehensive legislation on the subject. This sort of catchword business and umbrella coverage will not do. We must appreciate the fact that this is the right step taken at the right time.

As we all are aware, the condition of

child labour is really alarming and all must appreciate the effort put in by the Government the sincere effort made by the Government at the right time to fight this growing menace of child labour. The Minister himself has while piloting Bill yesterday given the House information that the number of child labour in India, which was about 10 militon in the year 1971, has already gone up to more than 17 rathicr. You knew, child labour are at present working in different sectors. The Minister has tried to bring them under the purview of the new Act which we are going to pass. There are certain laudable provisions contained in Part 3, which is contained on page 3, clause number (vi) one to six. These are certain new additions to these rules which will help the child labourers and which will also help strengthen the hands of the State Government to fight this menace of child labour. But I would like to caution our hon. Labour Minister on this score. Yesterday, he himself admitted on the floor of this House that -though he did not use the language that I am using, but the purport was almost similar-laws are honoured more in a breach than in adherence, because most of the exploiters, the employers, prefer to pay the fine rather than adhering to the law. And that is why he has proposed to introduce some deterent and stringent punishment to bring such employers to book. 1-00 P.M.

While I was visiting Punjab, I went to Husainiwala and by the side of the tomb of the famous martyr, Shaheed Bhagat Singh, I saw one message: 'SAR FAROSHI KI TAMANNA AB HAMARE DIL MEN HAI; DEKHANA HAI ZOR KITNA, BAZU-E QATIL MEN HAI', I am not so much good in Hindi or Urdu but as I understood, the meaning is, the urge of freedom is burning in my heart; let me see how strong is our enemy. So, I really appreciate the efforts of the Labour Ministry to emancipate the child labour. But the Labour Minister must realise how strong the exploiters are. must have a pure and clear assessment of the situation. These exploiters of situation deprive the labour by not giving their due wage, not giving limited hours of work and are treating them beasts, which is very much the reminis-

#### agitation by [Shri Kamalendu Bhattacharjee]

Re. work-to-rule

cent of the black workers as has depicted in Sidney Sheldon's Bloodline. We must know how powerful these operators are; he must have a clear understanding of the situation and only then he will able to realise the problem of child labour. India being a poor country, we cannot afford the luxury of banning child labour altogether but we must try to understand and realise how we can go in for overhaul of the situation. We must change our outlook. Unless and until is awareness of the problem, and until the whole structure, the econimic and social structure of the country is changed, this problem will remain. you go to a military academy, you will notice that as we say and believe that child is father of the nation, the child tomorrow will become soldier of the nation and he has to believe in the principles of a soldier, and it is writen there: Safety, honour and welfare of the country comes first, always and everytime; safety, honour and welfare of the man comes next, always and everytime; safety, honor and welfare of your own self comes last, always and everytime. So, we have to imbibe child with this spirit of patriotism and if we have to imbibe a child with this spirit of nationalism, we must give him a sense of social security. What does he do when his father dies? You write to the department; his mother has become helpless and they show you rules and regulations that they cannot just employ the mother, and the child has to go and work, and become a menace for the whole country. We must look at the problem from a pragmatic view; we must take a pragmatic approach towards the problem and try to solve it.

I believe this is a very laudable Bill. I would appeal to our friends in the Opposition to extend their cooperation that this Bill is passed. With these words, I conclude. Thank you.

श्री सूर्ज प्रसाद (बिहार) : महोदय, बाल श्रमिकों श्रमिको के संबंध में जो यह बिल सरकार लाई है, पहले के कानून से इस मायने में बेहतर है कि इसमें कुछ ऐसी चीजों का समावेश किया गया है जिससे

कुछ उद्योगों में बालक श्रमिक के रूप में ग्रब काम नहीं कर सकेंगे ग्रौर साथ ही साथ जहां पहले काम के घंटे सत थे उसको घटाकर सरकार ने 6 घंटे किया है। लेकिन यह कानन कई मायने। में दोषपूर्ण है ग्रौर लोग जैसी उम्मीद करते थे उस उम्मीद के म्ताबिक यह बिल नहीं बनाया गया है। दुनिया में जो सर्वेक्षण किया गया है उसके ग्रनसार 55 मिलियन बाल श्रमिक हैं। भीरत कई बातों में फर्स्ट है ग्रीर बाल श्रमिकों के मामले में भी भारत फर्स्ट निकल रहा है। दुनिया में जितने भी बाल श्रीमक हैं करीब करीब उसके एक तिहाई बाल श्रमिक इस देश के ग्रंदर हैं ग्रौर करीब-करीब 20 मिलियन बाल श्रमिक हमारे देश में जो ग्रध्ययन किया गया है उसमें पाये गये हैं। बाल श्रमिकों के बारे में जो सबसे प्रमुख प्रक्त है वह यह है कि बाल श्रमिकों का 79 प्रतिशत खेतों में इस्तेमाल किया जाता है । यहां भी सरकार कान्न बहुत ही कमजोर है। यह जो कान्न बनाया गया है इस कानून के दायरे के ग्रंदर भी जो साढ़े पांच लाख गांव हैं, जिन गांवों में यह बाल श्रमिक खेतों ग्रौर खिल-हानों में काम करते हैं या चरावाहों के रूप में काम करते हैं, या घरेलू नौकर के रूप में काम करते हैं उनको किस तरह से नियंत्रित किया जायेगा, इस कानून के दायरे के ग्रंदर में कोई खास तरह की बात देखने को नहीं मिलती है । शहरों में बीड़ी बनाने के काम में, दरी की बुनाई के काम में, लकड़ी उद्योग होटलों में, दुकानों में घरेल नौकरों के रूप में बाल श्रमिकों का इस्तेमाल होता है ग्रौर न सिर्फ उनका शोषण मजदूरी के रूप में होता है बल्कि उनका सैक्सुग्रल एक्सप्लाइटेशन भी होता है। ये बाल श्रमिक ग्राखिर क्यों पैदा हो रहे हैं ? सरकार को चाहिए था कि वह इस तरह का कानुन लाती जिससे बाल श्रमिकों पर प्रतिबंध लग सकता. उनके ग्रप्वाइन्टमेन्ट पर रोक लग सकती । लेकिन सरकार ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे इसमें रोक लग सके। सरकार ने केवल श्रमिकों को रेगलेट करने के लिये इस बिल में प्रावधान किया है । जहां तक मेरी समझ है बाल श्रमिकों के पैदा होने का प्रधान

कारण देश में गरेबी है। स्राज भी 50 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे हैं श्रौर उन्हीं लोगों के बच्चे बाल श्रमिकों के रूप में ग्राज देश के ग्रंदर इस्तेमाल होते हैं। जिनके हाथों में पढ़ने के लिये किताब ोनी चाहिए, जिनके हाथों में स्लेट ग्रौर वैंसिल होनी चाहिए वे स्राज होटलों में मजदुरों का काम करते हैं, वे ग्राज चीनी बादाम बेचकर ग्रपनी जीविका का उपार्जन करते हैं। ये बाल श्रीमक देश की राष्ट्रीय पंजी हैं ग्रौर सरकार या कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह बाल श्रमिकों के कल्याण की दिशा में कोई व्यापक योजना बना कर उस पर विचार करे। लेकिन ऐसा तो है नहीं गरीबी की रेखा से लोगों को ऊपर उठाने की सरकार की जो योजना है, ग्रगर वे सफल होती तो ऐसी स्थिति न म्राती। क्यों होते हैं ये बालक श्रमिक ? यह इसलिये क्योंकि उनके परिवार की ग्रामदनी कम है, उस परिवार का भरण-पोषण ठीक से नहीं होता है, इसलिये उन बच्चों के ग्रभिभावक उन बालकों को किसी काम में लगा देते हैं। यह है उनका कारण (ग्रगर गरीबी) रेखा से लोगों को ऊपर उठा दिया जाए तो यह बाल किसी होटल, दुकान या किसी ग्रौर जगह पर काम करने के लिए नहीं जाएंगे यह बालक स्कूल जाएंगे। यह एक ऋध्ययन के मताबिक स्कलों में बालकों की संख्या में गरावट का प्रधान कारण यह भी है कि यह बालक स्कलों में न जाकर कहीं ग्रीर काम करते हैं । इसलिए इस दिशा में सरकार को सोचना चाहिए । मेरी समझ यह है कि सरकार की जो गरीबी मिटाने की योजना है वह तो महज राहत है रिलीफ है, समस्या का कोई संमाधान नहीं है ग्रौर इसलिए इससे बाल श्रमिकों की संख्या में कोई कमी हो जाएगी थह मेरा ग्रन्दाज नहीं है बाल्क देश के ग्रन्दर दिन प्रति दिन बाल श्रीमकों की संख्या भें गणात्मक विकास होता जारहा है। पूर्व के जो कानुन बने हैं उस में इंस्पेक्टर की व्यवस्था की गई थी जिनका काम यह था कि बाल श्रमिकों के शोषण पर कछ निगरानी रखें नियंत्रित करें लेकिन जो ग्रध्ययन हम्रा है उसके ग्रनुसार यह व्यवस्था भी इनइफेक्टिव साबित हुई है। सरकार ने इस कानून में फिर उसी तरह की व्यवस्था का प्रावधान किया है मुझे यह नहीं लगता है

कि यह इंस्पेक्टर्ज बाल श्रमिकों के शोषण के खिलाफ कोई प्रभावी कदम उठा पाएंगे इसलिए हामरा सुझाव यह है कि इंस्पेक्टो रेट का जो इंस्टीट्युशन सरकार नेतैयार किया है उसको ग्रधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में कदम उठाना चाहिये । काम के घंटे तय किये गये हैं, पहले 8 घंटे थे, उसको घटाकर 7 घंटे तय किये गये ग्रौर ग्रब सरकार ने उसकी घटाकर 6 घंटे करने का प्रावधान किया है। इस संबंध में मेरा कहना यह है कि काम केतो 6 घंटे है यह 6 घंटे काम नहीं करते हैं उनके काम के घंटे सुनिश्चित नहीं है वें 12-14 घंटे तक काम करते हैं। ग्रगर किसी होटल में काम करते हैं। तो उनको रात को पांच छ: घंटे सोने के लिए मिलते हैं। इसलिए काम के घंटे की जो व्यवस्था सरकार कानन में की है उसको सहती से लागु करने की दिशा में इंस्पेक्टर की जिम्मेदारी दी जानी चाहिये। सरकार ने म्राधे मन से यह कान्न लाया है। पहले के कानन में तीन महीने की सजा ग्रीर ग्रधिक से ग्रधिक एक वर्ष की सजा की व्यवस्था है ग्रौर सरकार ने जो ग्रब कानन बनाया है। उस में भी यही व्यवस्था है। सरकार को चाहियेथा कि इस दण्ड देने वाली व्यवस्था को ग्रौर ग्रधिक कठोर बनाया जाए ताकि करने वाले जो हैं वह कुछ भयभीत ग्रौर इससे हो सकें डर सकें। लेकिन तीन महीने की सजा खास सजा नहीं है। यह महज .एक खेल के समान साबित होगा । एक ग्रध्ययन के ग्रनसार यह जो कानन पास होते हैं खास कर के सोशल कानन पास होते हैं इनकी जानकारी लोगों को नहीं है। इनका जानकारी कराये जाने की जरुरत है। सोशल कानुन को लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है। सरकार को इनका प्रचार द रना चाहिये। सरकार के पास रेडियो है, टी० वी० है। रेडियो ग्रौर टी० वी० किस का प्रचार करते हैं, मंत्रियों की खुबसूरती का ग्रौर मंत्रियों का बखान करते हैं। टी० वी० से चहरे प्रचारित होते हैं। लेकिन जो सोशल कानून हैं जिनको ग्रधिक से ग्रधिक लोगो तक पहुंचाने की जरूरत है इस के लि इन प्रचार साधनों का इस्तेमाल नहीं हो पाता है । इसलिए मेरा सुझाव होगा, यह कानून तो पारित होगा ही क्योंकि

### [सूरज प्रसाद]

पास बट मेजोरिटी है इसलिए पास होना ही है, कानून पास होने के बाद जब ग्रमल का पहल आए तो सरकार को इस कानून के प्रचार के लिए अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए । बाल श्रीमक किसी द्रेड युनियन में संगठित नहीं है और संगठित न होने के कारण इनका ऋधिक से ऋधिक एक्सप्लायटेशन होता है । इसलिए हमारा स्झाव यह होगा कि इस कानुन के पारित होने के बाद तमाम देड युनियन्स की एक बैठक बलाई जानी चाहिये जिसमें इस कानुन करने की दिशा में ट्रेड यूनियंस की क्या भीमका होगी इस पर विचार किया जाना चाहिये। ग्रंत में मैं यह कहना चाह गा कि यह जो बाल श्रमिक हैं ग्रगर इनको भी मौका मिले तो ये भी देश कें रतन बन सकते हैं न मिलने के कारण ग्रवसर में ये जो कलियां हैं ये बालकों के रूप हुए मुरझा जाती हैं। बिना विकसित इन्हें बहुत ग्रधिक पढाने की सुविधा न हो सके लिकन मेरा ख्याल यह है कि कम से कम इनको साक्षर बनाने के लिए जो इनको इम्प्लाय करने वाले हैं उन पर इसकी जिम्मेदारी होती चाहिए ग्रौर सरकार को भी इस दिशा में कदम उठाना चाहिए ताकि इनको कम से कम साक्षर बनाया जा सके। अगर अधिक से अधिक इनको शिक्षित नहीं कर सकते हैं उच्च शिक्षा की सबको सुविधा नहीं दे सकते हैं तो कम से कम इन्हें साक्षर बनाने की दिशा में तो कदम उठाना चाहिए और यह बीमारी देश में तब तक रहेगी जब तक देश के म्रंदर शिक्षा के ग्रानिवार्य नहीं बना दिया जाता है श्रीर सरकार इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाती, तब तक ये चीजें खत्म होने वाली नहीं है। संविधान में 10 वर्ष के अंदर शिक्षा को ग्रनिवार्य बनाने की बात थी ? श्रव 1990 तक भी शिक्षा श्रनिवार्य नहीं होने वाली है । इसके बाद ही सरकार सोव रही है। इसलिए मेरा सुझाव है कि आप तो मंत्रीमंडल के आदमी हैं इस पर विचार करें कि शिक्षा को कैसे म्रानिवार्य बनाया जाये ताकि जो बाल श्रमिक हैं शिक्षा का लाभइनको देश में मिल सके स्रौरये स्रपने दिनाग कों विकसित कर सकें तथा राष्ट्र की निधि के रूप में ये भी अपने को संवार सकें। इन्हीं शब्दों के साथ में अपनी बात सनाप्त करता हं।

श्री केशव प्रसाद शक्त (मध्य प्रदेश): उपाध्यक्ष महोदय, मैं बाल श्रम (प्रतिषेध ग्रौर विनियमन ) विधेयक, 1986का समर्थन करता है। बाल श्रीमकों को विभिन्न प्रतिष्ठानों कारखानों भ्रौर उद्योगों में मजदरी करके ग्रपना ग्रौर ग्रपने कुटुम्ब का भरण-पोषण करना पड़ता है। इसका कारण क्या है ? इस पर लोग ग्रगर विचार करें तो यह गराबी की रेखा से तीचे रहने वाले लोगों के शोवण का एक कार्य है। जो लोग गरीबी की रेखा के नीचे रह रहे वे ग्रपने परिवार के भरण-पोषण के लिए ग्रयन बालकों को छोटे-छोटे कामों में लगात है ग्रौर उनक साथ ही बड़े-बड़े उद्योगों में भी उनको लगाया जाता है जिससे उनका शोषण होता है, इस शोषण को खत्म करने के लिए ही यह विधेयक लाया गया है। इसके पहले भी कई ग्रधिनियम थे लेकिन नहीं थी, उस एकरूपता उनमें एकरूपता को बनाने के लिए जो यह विधेयक साया गया है उसका मैं स्वागत करता हं। इस विधेयक के द्वारा मैं कुछ बातों की ग्रोर मंत्री जी का ध्यान स्नाकषित करना चाहता हुं। इसमें जो ज्यादा से ज्यादा दण्ड की प्रक्रिया की गयी है वह पहले जैसी है। मेरा सुझाव है कि इसमें रिगरस दण्ड होना चाहिए था जो कि नहीं हुआ, है। मैं धारा 14 (1) की ग्रोर ग्रापका ध्यान ग्राकर्षित करना चाहता हूं जिसमें यह प्रावधान रखा गया है कि : "जो कोई किसी बालक को धारा 3 के उपबंधों के उल्लंघन में कार्य करने के लिए नियोजित करेगा या उसकी ग्रनुज्ञा देगा वह कारावास से, जिसकी ग्रवधि तीन मास से कम नहीं होगी, किन्तु एक वर्ष तक की हो सकेगी, या जुर्मीन से, जो दस हजार रुपए से कम का नहीं होगा, किन्त बीस हजार रुपए तक का हो सकेगा, या दोनों से, दंडनीय होगा ।"

technicians of the Tele-

communication Deptt.

इसमें सत्रम कारावास शब्द नहीं रखा गया है । मेरा सुझाव है कि इसमें कठोर कारावास होना चाहिए । जैसे ग्रभी एक वक्ता महोदग्र ने बताया यह तो पहले ही जैसा प्रांवधान था। इसको ज्यादा रिगरस करना च हिए था जिससे लोगों को एक भय पैदा हो ग्रौर बाल श्रमिकों का शोषण न हो सके। इसलिए मेरा सूझाव है कि यहाँ

पर ग्रगर नहीं तो ग्रागे चलकर इस ग्रोर ध्यान दिया जाये ग्रीर इसमें ज्यादा कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाये, इसको सख्त किया जाये त कि लोग बालकों का शोषण न कर सकें। यह बड़े दुख की बात है कि हमारी स्वतंत्रता के 39 साल बाद भी म्राज हमारे देश में करोड़ों लड़के बाल श्रमिक के रूप में कार्य कर रहें हैं। घरेलू उद्योगों से लेकर, घरेल कामों से लेकर बड़े-बड़े कठोर कामों में, उद्योगों में ग्रौर यहां तक कि मशीनों में भी उनका नियोजन किया जाता है।

तो यह एक दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है। इसको रोकने के लिए यह जो विधेयक लाया गया है, यह उचित है और मैं इसका स्वागत करता हं।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इसका स्वागत करता हूं।

थी राम अवधश सिंह (बिहार) : उप-सभाध्यक्ष महोदय, मैं मौजुदा संशोधन विधेयक की भावना का तो आदर करता हूं लेकिन जो उद्देश्य इसमें रखे गए हैं, वे कामयाब होने वाले नहीं है और मैं समझता हं कि यह ऐसा विधेयक है, जैसे कोई गरीब आदमी किसी धनी के घर गया और जाकर देखा कि पाखाना बहुत अच्छा बना है, लैटरीन बहुत अच्छा बना है, तो अपने घर में ग्राकर वह कहना च हे कि हम भी पाखाना बनायेंगे, लेकिन उसके घर में खाने की व्यवस्था नहीं है ।

वै से ही यह विधेयक हैं कि यह तो कल्पना की गई है । इसका पहला उद्देश्य है, जो **ग्र**ंब्जैक्टस एण्ड रीजंस है, जो ग्रंबजैक्टिब्ज हैं इसके, उसका 🕆 जो पहला ग्राबजक्टिव है, वह भी किसी कीमत पर इस सरकार के बुते के बाहर है प्राप्त करना । यह सरकार नःकः रगड कर मर जःएगी, तो भी उस श्राबजैक्टिव को प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि वह है कि चौदह सःल से नीचे के बच्चों को नौकरी में नहीं जाने देना, उस पर पाबन्दी लगाना ग्रौर यह नहीं हो सकता, किसी पर इससे होने वाली बात नहीं है। तब इसको बड़ी-बड़ी बात कहने की क्या **ञरु**रत है।

श्रव दूसरी बात कहो। श्राप कह सकते हो कि जो लोग काम करेंगे, उनके काम की कंडिशंस में हम सुधार कर सकते हैं, लेकिन म्राप बैन कैसे कर देंगे। गरीबों की पंजी उनके बच्चे हैं। ग्राठ, दस , बारह साल के जब बच्चे हो जाते हैं, तो उनके मां बाप की पंजी होते हैं। वह किसी का झठा बर्तन मलते हैं, किसी होटल में काम करते हैं, चाय की दकान में काम करते हैं, किसी की चरव ही करते हैं, जो वहां से उनको मिलता है तो वह खाते हैं।

यह सरकार, ऐसे कम से कम चार करोड बच्चे इस देश में हैं, सारे हिन्दस्तान में, ग्रभी सारे नौकर चाकर, मिलिटरी. रेलवे, पब्लिक अण्डरटेकिंगस मिलाकर तीन करोड़ से ज्यादा नहीं हैं ग्रौर यह चार करोड बच्चों की यह सरकार क्या पढाई करवा सकती है ? नहीं करवा स**कत**ी हैं।

यह शर्म की बात है कि इस सरकार के लिए कि भारत के नीति-निदेशक तत्वों के सिद्धांत में स्पष्ट इसका प्रावधान है कि चौंदह साल के बच्चों को ग्रनिवार्य शिक्षा दी जाएगी, ग्रौर यह उन चालीस वर्षों के बाद, मतलब संविधान लागु होने के ग्राप कह सकते हैं कि 36-37 साल के बावजद स्रभी भी कम्पलसरी एजकशन की व्यवस्था नहीं की गई है । यह श्रफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इस सरकार के पास न इतनी दष्टि है और न क्षमता है ग्रीर क्षमता है भी, तो वह दूसरी डाइरेक्शन में लगाती है, अपनी फेल्योर को यह ग्रब कह कर **हमारे** सामने, आपके सामने और दुनिया के सामन शोखी मारती है कि यह हम ऐसे लोक-कल्याणकारी काम करने जा रहें हैं, लेकिन यह होने वाला नहीं है। अागे मैं इसके प्राव-धान केबारे में बताना चःहता*ह*ा इसका जो फाइनांसियल मैमोरेडम म्राप पढ लें, उसमें क्या खर्च दिखाया गया है। हमारे यहां कहावत है कि खोदा पहाड निकली चहिया । इसमें एक चाइल्ड लेबर टेक्नीकल एडवाइजरी कमेटी की स्था-पना की बात कही गई है। उसका क्या काम है ? सारे देश में घम-घम कर र्थीर्कग कडीशन का पता लगाना ग्रीर तमाम चीजों के बारे में सलाह देना। खर्च कितना है खर्च दिखाया गया है । खर्च सब

### [श्री राम अवधेश सिह]

Re. work-to-rule

agitation by

मिलाकर 75 हजार रुपये । 75 हजार रुपयाः में कोई चाइल्ड लेबर टैक्नीकल एडव इजरी कनेटी दौरा करेगी, घूमेगी, रिपोर्ट देगी क्या करेगी, ? यह भुलावे की बात है, धोखा देने की बात है। ग्राप कुछ करना चाहते हैं तो ठीक से करें ग्रौर टैक्नीकल क्या करना है इसमें उसको टैक्नीकल एड-वाइज क्या देनी है ? यह ठगने वाली बात स्रापने क्यों कर दी है। इसमें तुम कहो कि वैलफेयर एडवाइजरी कमेटी उसके वैलफेयर के लिए क्या करने जा रही है। क्या-क्या उनको सुविधाएं दी जा सकती हैं ? जो क(म करते हैं जिनके लिए ग्राप परमिशन दे चुकें हैं कि वे लोग काम कर सकते हैं उनके लिए क्या कर सकते हो ? जो लोग ग्रभी भोंस चराते हैं बकरी चराते हैं, होटलों में काम करते हैं उनके लिए क्या कर सकते हों जो ग्रापके शैंडयूल ए ग्रौर बी है उसको जराठीक से देखिए । उसमें ग्रापने लिखा है:

of passengers, goods "Transport mails by railway; Cinder picking, clearing of an ash pit..... Work in a catering establishment at a railway station, involving the movement of a vendor....."

इसमें कहीं इस बात का जिक्र नहीं है कि जो होटलों में काम करते हैं, ग्राप बिहार में चले जाइये, ग्राप बंगाल में चले जाइये, वहां छोटे-छोटे होटलों में 18-18 घंटे वे काम करते हैं। सबेरे पांच बजे से जो बच्चे चलते हैं, वे वर्तन साफ करते हैं, उनके ह थ गल जातें हैं। मंत्री महोदय ग्राप कभी चलिए, मैं ग्रापको रांची में दिखाता हूं। हजारीबाग श्रौर पटना में दिखाता हूं कि उन बच्चों के हाथ पांव कैसे गल सड गए हैं। उनको ठीक से देखन। है तो ग्राप हमदर्दी से देखिए । उसके बारे में कोई जिक्र ही नहीं है, उसको ग्रापने जोड़ा ही नहीं है । कैंटरिंग एट रेलवे स्टेशन्ज, उससे क्या होगा, शब्तर चिट्ठी लाते हैं, पहले जमाने में हम लोग पढ़ते थे कि कबूतरों का खत है। तो ग्राप कबूतरों का खत मत िदेखिए, रेलवे स्टेशन पर म्राप जाते हैं, ये जो गलियां है शहरों में श्रौर जो छोटी-छोटी चाय की दुकानें हैं उनमें उनकी क्या स्थिति

है उनके बारे में भी प्राप जरा ख्याल करिए इसलिए उनको भी ग्राप इसमें जोड़ दीजिए कि जो छोटे-छोटे होटलों में काम करते हैं। ग्रापने इसको व्यापक कितना बना दिया, रेसपासिबिलिटी किसी को नहीं दी। अप देखिए जो ग्रापने सैनशन 16 बन्।या है, यह बना तो दिया लेकिन बहुत व्यापक बना दिया, विश्वव्यापी है, ग्रापकी लेंग्वेज है :

"Any person, police officer or Inspector may file a complaint of the commission of an offence under this Act in any court of competent jurisdiction."

"एनी पर्सन" में जाकर फाइलै कर सकता है, यही है। यह बात तो पुलिस के सी अग्रार० पी० सी० एक्ट में भी रहती है कि कोई फाइल कर सकता है। लेकिन थाना में जहां प्रेस काइब्ड है फाइल करना वहां भी कोई जाता है एफ अधिक आर दर्ज कराने तो दरोगा कहता है कि पहले हमको दौ सौ रुपया देदो तब तुम्हारी यह एफ० ग्राई० म्रार० लिखेंगे । लेकिन इन बेगुन*ा*ह ब<del>च्</del>चों के पक्ष में गवाही कौन देगा। गवाही के बारे में ग्राप स्पेसिफक कहिए कि किस तरह के एवीडेंस पर प्रोसीक्यूशन स्टार्ट होगा, कौन लोग विटनेस होंगे ? मान लीजिए खाली वह अपने से कह दे, यही प्राइमाफेसी केंस माना जायेगा या नहीं ? क्योंकि वे तो कमजोर लोग हैं, वे गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के ग्रनाथ बच्चे हैं । ऐसे बच्चे जिनको स्कूल में होना चाहिए, ऐसे बच्चे जिनको शिक्षा दी जानी चाहिए, ऐसे राष्ट्र की होतहार कलियों को मसला जा रहा है इस व्यवस्था के कूर हाथों के जरिए से, तो मैं यह कहना चाहता हूं कि ग्राप पैनल्ढी का प्रोविजन भले बढा दिए हों। तीन महीने से एक साल कर दें या हजार से दस हजार कर दें, यह कोई मायने नहीं रखता यह मायने तब होगा, जब कि ग्राप यह स्पेसिफिक कहें, इसमें प्रावधान करें, संशोधन कर लीजिए मेरा, कि इसमें जो एवीडेन्स की जरुरत होगी, कोई ग्रादमी जाकर रिकार्ड करादे। श्रपने ही जाकर रिकार्डकरादे। इस्पेक्टर क्या करेगा ?

वह बेचारा अनाथ बच्चा जानता हो नहीं कि कौन इंस्पेक्टर है। उसके दिमाग .

में है ही नहीं कि इंस्पेक्टर क्या है। वह नहीं जानता है । इसलिए मेरा ग्रापसे, मंत्री महोदय से अनुरोध है कि इसको अप इफ-क्टिव बनाना चाहते हैं ग्रौर ग्रयने पीनल प्रोवीजन को सख्ती से लागू करना चाहते हैं तो मेरा नम्य निवेदन है, अनुरोध है कि अप ग्रपने से भी इसको जोड़ लीजिए<sup>ँ</sup>. . (**व्यवधान**)।

Re. work-to-rule

agitation by

(SHRI VICE-CHAIRMAN THE PAWAN KUMAR BANSAL): Will you continue after lunch?

SHRI RAM AWADESH SINGH: right.

(SHRI VICE-CHAIRMAN THE PAWAN KUMAR BANSAL): Now will adjourn til 2.30 P.M.

The House then adjourned for lunch at thirty-one minutes past one of clock.

lunch The House reassembled after at thirty three minutes past two of the (Shri Vice-Chaiman pawan Kumar Bansal) is the Chair.

श्री राम ग्रवधेश सिंह : महोदय, कल हमारे लायक दोस्त कल्पनाथजी ने जो भाषण किया चाइल्ड लेबर ग्रमेंडमेंड बिल पर उसको मुनकर मुझे बहुत हंसो आ रही है, कहां घाव है, कहां ग्रापरेशन कर रहे हैं। वह समाजवादी रहे हैं, डा० लो हिया के भ्रन्यायी रहे हैं, मैं नहीं समझता था कि वह इस तरह का स्तुतिगान सरकार का करेंगे । संविधान की व्यवस्था को उन्होंने पढ़ा । जिसको कहना चाहिये था उसको नहीं कहा । कम्पलसरी एजूकेशन के विषय में कहना चाहिये था कि यह सरकार विफल रही है, उसको योजनायें विफल रही हैं। इस सरकार ने ग्राज तक संविधान की व्यवस्थाभ्रों को लागू नहीं किया । बहुत दर्द के साथ मैं कहना चाहता हूं कि योजनायों की प्राथमिकता में जरूर गड़बड़ी है, नहीं तो इतनी बड़ी संख्या में बच्चे क्यों मजबूर होते हैं मजदूरी करन के लिये। योजना की प्राथमिकता में बदलाव ग्राना चाहिये मझे ग्रुफसोस के साथ कहना पड़ता कि ग्राज इस सभा में जब हम लोग चाइल्ड

वैलफेयर की बात कर रहे हैं, बच्चों के कल्याण की बात कर रहे हैं तो उस समय निश्चित तौर पर शिक्षा मंत्री को जो इस समय ह यूमेन रिसोर्स डेवलपमेंट मंत्री बोले जाते हैं, उनको भी रहना चाहिये, पर वे नहीं हैं। जो कुछ हम लोग ग्रेभी विचार कर रहे हैं इस ग्रमेडमेंड के तहत उसके कलेवर में यह बात नहीं स्राती । इसके लिये एक कांप्रेहेंसिव बिल लाना चाहिये ताकि यह जो चार करोड़ बाल मजदूर हैं सारे देश में उनके कल्याण के बारे कोई योजना बने ग्रौर योजना काफीडेंस में लेकर इस पर विशेष विचार किया जाना चाहिये। कैंदल दो स्रमेंडमेंड तो दिये गये कि यह लेबल बेन कर दिया गया ग्रौर इसको रेग लेट कर दिया गया, तो केवल रेगुलेशन से ग्रौर बैन करने से यह बाल मजदूरों की समस्या हल होने वाली नहीं है । इसलिये मैं इस अमेंडमैंड का जोरदार विरोध करता हूं ग्रौर कहता हूं कि इस बिल को वापस ले लिया जाना चाहिये । इससे क्छ बनने बिगड़ने वाला नहीं है। इस से एक इंच भी, एक फीसदी भी भलाई होने वाली नहीं है। यह केवल बकवास है। इस पर नाहक बहस हो रही है ग्रौर बहस में जितना पैसा सरकार का ग्रौर संसद का खर्च हो रहा है वह बेमतलब हो रहा है। जितने पैसे ग्राज इस बहस में खर्च होंगे उतना पैसा भी एडवाइजरी बोर्ड के निर्माण पर खर्च नहीं किया गया । मैं समझता हूं कि माननीय मंत्री जी को मांग करनी चाहिये थी कि संसद इसके लिये ज्यादा पैसा सैंक्शन करे ताकि पूरे विस्तार के साथ बाल मजदूरों की समस्याग्रों का म्राकलन किया जाये म्रौर उसको देखा जाय ग्रौर फिर एक व्यापक बिल लाया जाये उन बाल मजदूरों के बारे में। यह तो उनकी मजबूरी है । मैं कहना चाहता हूं कि ग्राप कल्पना कीजिये कि उसकी बूढ़ी मां है, बाप है ग्रौर उसके घर में कोई कमाने वाला नहीं है। उस घर में एक 13 साल का लड़का है, एक 14 साल का लड़का है ग्रौर एक 11 साल का लड़का है। ग्रगर वह लड़का कमाने नहीं जायेगा तो उस की मां जो बीमार है, बाप जी लंगडा है, वह क्या करेगा । क्या ग्राप उसके मजदूरों करने पर बैन लगां देंगे ग्रौर क्या वह इस

agitation by [श्री: राम अवधश सिंह]

Re. work-to-rule

से रुक जायेगा । नहीं रुकेगा । यहां न तो वृद्ध पेंशन की व्यवस्था है ग्रौर सोशल सेक्योरिटी का तो बिलकुल ग्रभाव है ग्रौर ऐसी स्थिति में ग्राप चाहते हैं घाव पर केवल मरहम पट्टी करके ग्राप दिखा दें कि घाव नहीं है। तो इससे काम चलने वाला नहीं है । यह अमेंडमेंट तो जैसे एक सालाना खुजली होती है हर एक विभाग में, वैसा ~ ही है। हर मंत्रालय में एक सालाना खुजली होती है। मंत्री जी को जब खुजली ग्राती है, उनके दिमाग ने तो सिर खुजलाते-खुजलाते जो उन की एक्जीक्युटिव मंशीनरी होती है उसको कहते हैं कि कोई अमेंडमेंड ला दो और वह कोई ग्रमेंडमेंट लाकर इसी तरह से सदन का समय जाया करते हैं, सदन का सेमय नष्ट करते हैं इसलिये मैं चाहता हूं कि इस बिल को वापस लिया जाय ग्रौर इसकी जगह एक कांप्रेहेंसिव बिल लाया जाय ग्रौर इस में प्लानिंग कमीशन को भी इंवाल्व किया जाय ग्रौर शिक्षा मंत्रालय को भी इंवाल्ब किया जाय ताकि जो चार करोड़ बाल मजदूर हैं सहायता की जा सके भ्रौर जो बिना मजदूरी किये ग्रावारा की तरह घुमने वाले ग्रौर भीख मांगते बालक हैं उनकी भी व्यवस्था करने के नियं, उनको रिहैबिलिटेट करने के लिये कोई कार्य सरकार करे। ग्रगर यह नहीं होता तो इस बिल की कोई उपयोगित नहीं है। मैं जानता हूं कि मेरी यह सलाह सरकार नहीं मानेगी और यह बिल वापस नहीं लेगी । इस सरकार की तो रोड रोलर मेजारिटी है इस लिये यह बिल तो यहां पास हो ही जायगा ग्रौर इसी लिये मैंने सूझाव के तौर पर मांग की है। वैसे तो मैं इस अमेंडमेंट के खिलाफ हं ग्रौर इस बिल को वापस लिये जाने की बात कहता हूं लेकिन एडवाइजरी कमेटी का जो ग्राप का प्रावधान है उस को टेक्निकल एडवाइजरी कमेटी न बना कर वेलफेयर एडवाइजरी कमेटी बनाइये ग्रौर वेलफेयर एडवाइजरी कमेटी के काम को ग्रौर विस्तत करें ग्रौर इसको ग्राप ग्रौर बढ़ायें। इसके लिये ग्राप चार लाख मांगिये. पांच लाख मांगिये, दस लाख मांगिये। इस प्नीत काम के लिये हम धन देने के लिये तैथार हैं। कांग्रेस पार्टी तो रुपया

communication Deptt. बर्बाद करती है। कांग्रेस सरकार जहां खर्च नहीं करना चाहिये वहां खर्च करती है लेकिन भारत के नौनिहालों के निर्माण का जो काम है, उसमें हम लोग मदद दे सकते हैं, वह ग्राप कीजिये।

technicians of the Tele-

दूसरा जो काम है वह यह है कि जो पीनल प्राविजंस है उनको सख्ती के साथ लाग करने के लिये ऐसे प्रावधान उसमें लाइये ताकि उसकी कागनिजस हो जाय। कार्गानजेंस न होने पर ग्राप कितना भी पीनल प्राविजन बनाइये, उसका कोई फल निकलने वाला नहीं है। पीनल प्राविजन तो था लेकिन पिछले 10-15 सालों में म्रापने उनके सन्दर कितनों को सजा दिलाई म्राप बताइये । सारे देश का रिकार्ड क्या श्रापके पास है कि श्रापने 10-15 सालों में कितने लोगों को इस कानन को तोड़ने के लिये सजा दिलाई ग्रौर कितने लोग कानून के हवाले किये गये ? ग्रगर ग्रापके पास फिगर्स होतीं तो ग्राप स्वयं बताते। मैं यह स्पैसिफिक डिमांड करता हूं कि ग्राप जवाब देते समय बताइये कि स्रापने कितने लोगों को कानन के हवाले किया और उसमें कितनों को सजा दी गई। ग्राप यह भी बतायें कि इस कानून में कितनी गड़बड़ियां होती हैं। ग्राप हमारी बात को महसूस की जिये क्योंकि लाचार बच्चों की ग्रोर से कोई गवाही देने के लिये तैयार नहीं है। जो बच्चे होटलों में काम करते हैं उनकी स्थिति से ग्राप भी अवगत है। एक गिलास ट्ट गया तो उसके मुंह में तमाचा मारेंगे ग्रीर उसकी कीमत उसकी तनख्वाह में से काट लेंगे । 18 घंटे लोग होटलों में काम करते हैं लेकिन उनकी ग्रौर ग्रापका ध्यान नहीं गया है । तो मैं ग्रंत में मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि सबसे पहले तो वह एक काम करें कि इस बिल की वापस ले लें यह रही की टोकरी में फेंकने लायक आपका ग्रमेंडमेंट है। लेकिन ग्राप न मानें तो हमने जो संशोधन ग्रापको दिया है उस के रख लें। मेरी इच्छा व मांग है कि ग्राप इसको वापस करा लें । धन्यवाद ।

SHRI MURLIDHAR CHANDRA-KANT BHANDARE (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, I rise in support of the Bill but with some very serious reservations. Children are not only the citizens of tomorrow but they are the most precious and proud possessions which a nation has; they are at once the joy and pride of the family in which they are born, in society in which they grow. I want to emphasise that children are the first charge on any assets of a nation, be it Consolidated Fund or be it any thing, but the first charge of the nation We find, and I find it with are children. some regret, that this problem has not been looked at from that angle, and what is sought to be a manner perpetrated is what has been said by someone and has become a popular adage, namely, children are the poor man's riches. This is what we find, that instead of being the joy and pride, instead of blossoming like flowers in those tender years, the picture around is they are driven to a life of destitution, life of deprivation and a life of suffering beyond the capacity of my expression. And Sir. so far as the honourable Minister of Labour is concerned, I do think that there can be a better champion of the cause of children. But I think that even then he could have though! a little more deeply about this problem because the problem is one of children and it is an integrated problem and I would say, with all humility and with all respect to the honourable Minister and the Government, that it should have been tackled as a whole, Why do I say that? I have no objection to its being tackled in parts or patches provided tackling it in patches is going to ensure even a modicum success in our efforts to improve the lot of the children of our country. But what I find is that today you have tried to tackle the problem in a small area of prohibition and regulation of employment as I know, the implementation where, machinery is not only ineffective, but also very dismal. What is worse that like the Ministry of Health who has to depend upon the States for the implementation of its serious measures Mnistry of Labour also has no implementation machinery of its own. Now, what is there for us to see? We have to see whether, by making these provisions, we can really tackle the disease at all. Otherwise, we will only be tackling the symptoms and not the disease itself. After all, A 11 24 1358 RS---8

childhood is the most creative period in life. Children have no prejudices and they have no preconceived ideas and they just happy as they are; whether they are rich or whether they are poor and it th bounden duty of the society them healthy, to keep them happy and to provide them with the basic necessities and to provide them not only education. but also joy. But there can be no greater deprivation of children than want nutrition and, therefore, you have to provide for nutrition and provide them some joy by way of games in life. millions of under-privileged children not receive the urgent attention and what is necessary is to have an integrated pic-Look at the child and look the development of children and see what are the things which are left out of this Bill. It is only a prohibition and regulation Bill. It leaves out a provision for education, maybe even for non-formal education of children; it leaves out a provision for vocational training; it leaves out a provision for career development; leaves out a provision for nutrition; it leave out a provision for health care; leaves out a provision for recreation: and it leaves out a provision for the welfare of children. Now, what I am worned about is that if this measure fails, other measures also will fail. I am saying this bécause I am not quite confident since these days nobody knows what will succeed after having seen the utter failure of the security system for the Prime Minister. I am not quite confident about what will really succeed. If this measure fails, the other measures which could have taken precedence over this measure are also bound to fail. This is my apprehension and I am only sharing my anxiety, my reservation and my apprehension. The whole problem should have been tackled on a war-footing as a one integrated problem. What was necessary in an important debate like this was that the Minister for Child Welfare also should have been present here because it is an integrated thing. I do think that this is one thing where an the Ministry of Human Resources, Health and Family Welfare and of Labour are involved. I am glad that to our good fortune the honourable Minister of State for Health is with us today and she is

Bill, 1986

228

**FShri** Murlidhar Chandrakant Bhandare

listening to what I am saying. I know her grave concern for the welfare and the health of the children in the country. Now the point which I am making is that it is I take note of whatever not too late. has been said by Members of the Opposition. Everybody wraps , his ment in a package which is convenient The Members of the Opposition put their own covering on what they have But I think this is one subject which should be non-controversial. is one subject where the House should be united, because we are talking about the future of our country, and there not be petty distinctions, petty controversies on this issue. And I would like the Minister of Labour to take a very, very pragmatic view, because I have a feeling that these provisions will remain on paper and will be divorced from the realities.

Take the case of Sivakashi. Children leave their places of work at 2 a.m., in the morning, and return late when it is He knows that the last Memdusk time. ber of Parliament from Sivakashi vowed that child labour would end, and you know what happened: that Member defeated in the election because of vested I am not talking against Government. I am only trying to project what a gigantic task they have. Therefore, political will has to be shown. to be shown in all fields. I want to have the consensus of the House. I want the Government to look at it in a constructive way and in a very effective way for I do not the benefit of the children. know but the hon. Minister will certainly spell out how he is going to overnight improve the implementation machinery.

I talked of Sivakashi. Go to Khurja where there is the glass industry. This has come up from generation to generation. Now, there is a loophole that, well, if it is something run by the family it will be outside the scope of this Act. Let him look at the provision of section 3:

"Provided that nothing in this section shall apply to any workshop wherein any process is carried on by the occupier with the aid of his family or to

any school....."

I can understand 'school'.

'.... any school established by or receiving assistance or recognition from, Government."

They will say: this is not our unit, this is a family unit. And this is the surest way of getting out of it. If yo go to Khurja or Ferozabad almost the whole families are under bonded labour. the day before yesterday the Minister was giving us the figures about bonded labour. I feel that it is a great mischief. I am for protecting genuine family occupations, what will happen is that hazardous occupations will be conveniently dubbed as family occupations.

We must also try to look at the child in a different way. For example, under section 82 of the Indian Penal Code, anything which is done by a child under seven of age is not an offence. think it was written by Macaulay over a century earlier. I think it is time for you to raise this age from seven to twelve at least. I thought I would take this opportunity of expressing myself on this issue the section 83. The age of rational formaunderstanding should also be tion of changed. There is also another aspect about the number of children who are being detained in jail. I have got a cutting which shows that the All India Institute of Medical Sciences examined 17 children were in detention in Tihar Jail in 1983. Madam Minister of Health will realise the seriousness of this situation. They found that out of 17 children, 6 suffered from syphilis. This is the position of our children. I think a time has come when you should do away with the practice of detention of children with adult prisoners. Maha, rashtra has done it in a big way. This has to be done in many other States like U.P., Bihar, Jammu and Kashmir and several other places. Even West Bengal is not free from this. There are many many children put along with adult prisoners.

There is one more thing which shows how we look at the children. There is a juvenile court. If you post a Magistrate

to preside over a juvenile court, he thinks that it is a matter of demotion for him. That is very surprising. I think the juvenile court should be revamped so that it is not placed in the hands of one presiding judicial officer but it is presided by about 3 or 4 people where they will not only be judicial officers. I am glad the Hon'ble Minister of Child Welfare has come. I am taking of the children who are our future of tomorrow. We want our children to be tooked at as the riches of the nation and not as the riches of a poor man. The point which I was making was that juvenile court should be manned by a panel consisting of social scientists, parents, representatives and Governby judicial ment officers presided over officers so that there is a complete understanding. One cannot see under what appalling conditions our remand homes and other places are. Now the Ministry is under the charming and more Minister. Whosoever has been contributed by this House really surpasses both in charm and in dynamism. I have a note here which has been circulated by the Labour Ministry. I feel that a comprehensive Bill is under consideration of the Ministry of Labour because public debate was invited on this proposal. This is what the note savs:

"...in view of the socio-economic realities, a period of 10 years has been suggested. For this period, during which the employment of children is permitted, however, provision will have to be made regarding giving them adequate protection, namely, minimum satisfactory and hygienic conditions of work, prohibition of overtime, prohibition of night work, maximum permissible working hours, weekly rest day, etc. Facilities for certain welfare inputs like non-formal education, vocational training, periodical medical check-up, nutrition coverage, etc. would also be created. There would, however, be practical difficulties in extending the proposed Act to all the sectors of employment at one time....."

It is not as if they are not conscious of it. I think the Minister himself is more conscious about it. But there is no time

to lose. But if there is anything which has to be done on war-footing without losing any time at all, it is to come out with a comprehensive code for children covering every aspect because many have interpreted Article 24 of the Constitution to mean that it is a total ban on employment for children. I do not subscribe to that view for two reasons. Firstly, you are stretching the language too Secondly, it will go against the realities of the situation. Look at the provisions on the question of education, career and food. You will give meals where they are working. What does it mean? If a child is not working, he will not make a 3.00 P.M. get meals. Please provision that a child get meals whether he is working or not working. You know that when the mid-day meals were introduced in schools, the attendance improved. If you make it free meals, children who ought not to work will also work. You have to guard against that. I am not dogmatic at all. But I am merely mentioning in a very constructive spirit. And with all humanity and without meaning any opposition to the Government at all, I am pointing out the pitfalls which are there because this measure though brought with the loftiest of the ideals, though brought out as a quick step, is a first step in the right direction. If that step falls, even your direction will be lost. Therefore, I have nothing else to sav but give a limited support to this Bill. But I want an assurance that before our Budget session is out, we will have not only a look at it but also the enactment of the whole code on child which is the need

SHRI GHULAM RASOOL MATTO (Jammu and Kashmir): Mr. Vice-Chairman. Sir. I would like to bring to the kind attention of this House two provisions in the Constitution of India. One is article 39ff) which stipulates and I quote:

of the hour. Thank you, Sir.

"that children are given opportunities and facilities to develop in a healthy manner and in conditions of freedom and dignity and that childhood and youth are protected against exploitation and against moral and material abandonment."

[Shri Ghulam Rasool Matto]

Another provision is article 45 which provides and I quote:

"The State shall endeavour to provide, within a period of ten years from the commencement of this Constitution, for free and compulsory education for all children until they complete the age of fourteen years."

Thesee are the provisions in the Constitution of India. But when I look at this Bill, I feel that you are contravening the provisions of this Constitution. But when I look realistically at the matter, I find that if this Bill would not have come, the plight of the children would go further worse.

Sir, my friend, Mr. Ram Awadesh Singh has mentioned a figure of four crores as the child labour at present. I do not know from where he has got the figure. the Minister will kindly enlighten us about the approximate figure of child labour as at present. According to my estimate as a student of economics. I feel that by the end of the Eighth Plan, this figure will go to six crores. This will not diminish. I say this because the the rate of growth of our population is such that this figure is commensurate with that growth. So, under these circumstances, if some Bill is brought to ameliorate the conditions of the children, it is welcome. Now, it has to be seen whether this Bill meets all these obligations, all these necessities. I can say that there are many provisions in this Bill which. Murlidhar my friend, Mr. Bhandare short of the expectations. said. But right now, I have to see that this Bill must be passed because it is a step in the right direction, and we cannot help.

But, Sir, confinning myself therefore, to certain provisions of this Bill, I would make certain comments. And I would like the hon. Minister to kindly pay attention to me so that a reply is given to the points made by me. Sir, Part B is the Schedule. It speaks of carpet weaving. There is absolutely no mention of children employed in handicraft industries. My estimate is that

lakha and lakhs of children are employed in the handicrafts industries not only in Shaharanpur not only in Moradabad, not only in Kashmir but in other parts of the country also. I would request the hon. Minister to assure me that the handicrafts will also be included in this Schedule. The next point that I want to speak about is with regard to the child labour technical advisory committee. I think, this word-'technical' ought not to have been there. Even if by mistake the word 'technical' has been written, the Minister should assure that this a child labour advisory committee in a particular State. At a particular point of time there are child labour in a particular industry. At another pointof time another industry gets this child labour. So, this advisory committee should advise this other industry also. This may please be taken note of.

Now, Sir, there is a provision that the period of work on each day shall be so fixed that no period shall exceed three hours and that no child shall work for more than three hours before he has an interval of rest for at least one hour. Now, Sir, this is a provision that has been made. But it is very difficult to implement it unless and until there are certain provisions provided in this Bill. And, as a practical measure I would suggest that everywhere where an establishment registered under this Child Labour it should have a room, a separate room, maybe a small room but it should be commensurate with the number of children that he is employing where they may have rest or some recreation. This is very important because otherwise I find and I feel and I know that children come to work before dawn and leave for their homes only after dusk. This should be taken into consideration.

Now, Sir, my next point is with regard to section 9(3). It says that nothing in sections 7, 8 and 9 shall apply to any establishment where in any process is carried on by the occupier with the aid of his family or to any school established by, or receiving assistance or recognition from, Government. Mr. Minister, Sir, I would request you that in this provision what will you do where you have said that it will not apply to an establishment where

the occupier with the aid of his family or to any school established by or receiving assistance or recognition from the Government, because I know there are establishments everywhere where these stipuiations are there that it is a family, that it is done by the occupier and he has also a school but then he has also child labour. How can he be exempted from the provisions of the application of this Act? This should be made clear that where there is a child other than that of the occupier or his family, the provisions of this Act shall apply to him.

The Child Labour

Now, Sir, with regard to the penalties. Now, how do we get away from these penalties. Now, I would request you that you make a provision to keep a register wherein such and such a record will be maintained. Otherwise, this is the fundamental thing that one can evade and get away from the provisions of this Act. You have stated that whoever employs any child or permits any child to work in contravention of the provisions of section 3 shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than three months but which may extend to one year or with fine which shall not be less than ten thousand rupees which may extend to twenty thousand rupees or with both. But with regard to the basic requirements under which you will catch those offenders, you have reduced this nunishment to a simple imprisonment which may extend to one or with fine which may extend to ten thousand rupees or with both. The penalties in both the cases where the offence is committed and where the requirements are not complied with under which he can be cauht, should be the same as with regard to other provisions.

Now, Sir, Section 16 stipulates that any person, police officer or Inspector file a complaint of the commission of an offence under this Act in any court competent jurisdiction. Now, Sir, here would like the Minister to enlighten me and say that if the word "person" used in this Act means any person from the official labour department then I think it falls short of many things. If need be,

even by a rule, it should be made clear that any person can go to the Labour Court or a court and get a person challaned; whosoever he may be, any complainant can go to a court. If in my mohalla there is an establishment contravening these provisions, I should be able to go to a court and say it. It should be within my jurisdiction to go to a court. It should not mean that only a person belonging Labour Department or the Inspectorate of the Labour Department can complain. Any public man, any person, who detects an establishment where the provisions of the Act are being violated, should be abe to go to a court and get it challaned. This may be clarified by the hon. Minister,

Last point is with regard to courts. The procedure I think, in the labour cases is so cumbersome that it is very difficult for any one to get justice from the labour courts. I feel a provision should be made for summary trial, and summary courts, to hear petitions about violation of the Act. I hope the Minister will kindly look into these few suggestions that I have made. But this is a new measure and if there are any lacunae, those can be rectified. He should assure us that when it is implemented and worked out and if any lacanae are found these will be rectified by bringing in necessary amendments 50 that the plight of the children can be ameliorated. We know more than 50 per cent of our people live below the poverty line. How can we expect that figure of 4 crores as mentioned by Shri Ram Awdesh can be lesser in ten years when population is going up in rapid strides.

SHRI PRITHIBI MAJHI (Assam): rise to support the Bill. I appreciate and congratulate the Labour Minister for bringing this Bill before the House. Sir, this is for the first time in the country that a step has been taken for the welfare of child labour working in different establishmen's. This Bill bans appointment of children below the age of 14 and regulates conditions of work of the child labour. This Bill has fulfilled the long-standing demand of our country for making uniform legislation banning employment of child labour below the age of 14. There are

[Shri Prithibi Majhi]

many laws in our country, such as, Factory Act, Plantation Labour Act, Mining Act, and so on; but the age limit varies from Act to Act. No earlier legislation could give protection to child labour. After giving a legal status to child workers, I feel this Bill will improve their conditions.

More important provision in the Bill under secton 14 is to impose minimum and maximum punishment to the employer who is found guilty. As such, I think, this provision will certainly compel the employer to keep away from giving employment to children below the age of 14, and would compel them to take care of welfare of the child workers. But I fear about the proper implementation of such legislation in a complex economy and I doubt if this legislation could be properly implemented. In this economy, the rich have become richer and poor the poorer. Under article 24 of our Constitution it is provided that no child below the age of 14 shall be employed to work in any engaged in any factory or a mine or hazardous employment. But who cares for it? No other Constitution in the world contains such a provision, prohibiting employment of children. Yet our country has the highest number of child workers in the world. It is a fact that the number of child workers is not declining. Rather, it is increasing rapidly. There are about 52 million child workers in the world. Out of this, in India, more than 17 million children are working in various establishments. This means. India accounts for onethird of the total child labour. This is really unfortunate. This indicates the real economic condition in our country. This indicates the prevalence still in the society of socio-economic evils.

It is also not unknown that majority of the child labour belongs to the economically backward classes, particularly, the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes. Exploitation, deprivation and starvation are the reasons for the prevalence of child labour in India. The children of these backward sections of the population take up work in hazardous places in their tender age in order to help their parents with their meagre earnings for survival. It is also not unknown that these children are often treated like animals and they are compelled to work in inhuman conditions.

Now, sections 10 and 11 contain provision, in regard to certificate of age and the register to be maintained giving the date of birth of every child, hours and periods of work and so on. I cannot understand how these provisions will be implemented. As you now, most of these children come from illiterate families. No literate person will send his children to work in any establishment at any cost. When these children come from illiterate families and when they are not educated I do not know how the age of each child worker, his date of birth etc. will be shown and how will the officials be able to maintain this document. Therefore, the question arises as to how will this problem be solved. The late Labour Minister, Shri T. Anjaiah, had rightly said that—in the meeting of the Central Advisory Committee on child labour—the problem of child labour could not be solved only by legisaltion, but that there was need to generate social awareness and adopting a multi-dimensional approach to the problem.

Now, I would like to say a few words about tea plantation labour. A large number of children are employed in tea plantations in West Bengal, Assam, Nadu and Kerala. In Assam, not to speak of children, the whole labour community employed in these tea plantations is lagging behind in all spheres, social, economic and educational. Out of 55 lakhs tea and extea labour population, less than 1 per cent. in fact, it is 0.01 per cent-is literate. Therefore, they are forced to send their children to work in tea gardens and factories instead of sending them to schools. When such conditions prevail, how can you say that they will be able to reap the benefits of democracy? Therefore, I would request the Central Government as well as the Labour Minister to keep an eye on the problem of child Jabour and not depend on the State Governments only.

Sir. in this connection, I would have been satisfied if a provision for imparting education had been incorporated in this Bill itself. I find that there is no such provision here. I would suggest that it should be the obligation of the employers to make available facilities for education of the child workers, after working hours. I would request the hon. Labour Minister to consider including such a provision in the Bill. With these words, I support the Bill.

The Child Labour

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, I rise to stoutly oppose this obnoxious Bill. This Bill is likely to have disastrous consequences for the children. I can say, it is a wolf in sheep's clothing. It is nothing but regularisation of exploitation of children. It is nothing but legitimising the exploitation of children. The regularisation of child labour is, in effect, a cloud-seeding operation to ensure a daily rain of gold coins in the treasury rooms of the employers at a deadly cost of the child employee as well as the nation.

What has happened to the Directive Principles of the State Policy enshrined in the Constitution? Those provisions have now, due to this legislation, been thrown to the dustbin. Why do you still keep these provisions in the Constitution? Article 39 of the Constitution says:

"(e) that the health and strentgh of workers, men and women, and the tender age of children, are not abused and that citizens are not forced by economic necessity to enter avocations unsuited to their age or strength."

So, you cannot justify regularisation of child labour because of economic necessity of poverty. That is why, when they framed the Constitution, they realised this fact and emphasized that they should not be forced by economic necessity. Again part (f) of the same article says:

"that children are given opportunities and facilities to develop in a healthy manner and in conditions of freedom and dignity and that childhood and youth are protected against exploitation and against moral and material abandonment."

You are telling that our country has prospered. Prosperity has dawned on millions, and at the same time you are trying to regularise the child labour. I do not think anywhere in the world, in any developed or democratic country such a legislation would have been introduced.

I am surprised and shocked to go through certain provisions in the Bill. In Part II of the Bill, clause 3, a proviso has been added which says:

"Provided that nothing in this section shall apply to any worshop wherein any process in carried on by the occupier with the aid of his family or to any school established, by, or receiving assistance or recognition from, Government."

On the one hand you have prohibited or banned employment of children in certain occupations and processes. You have notified the processes and occupations. You have put a ban on private factories employ children in certain occupations and processes. And on the other, you are permitting the Government, you are permitting the schools where they are getting financial assistance from Government, to employ children in these hazardous processes. Is it justifiable? I would beg of the Minister to apply his mind to this aspect. There should not be exemption. If you exempt schools, they will exploit the children. The children will be exposed to the same hazardous processes. There can be no justification or explanation for this provision.

Then you have notified certain 11 processes manufacturing of matches, explosives and fire works. What about carrying of explosives and fireworks? Even in godowns children are employed to carry cement; they have to inhale the Just. According to one report, 75 per cent of the employees in carpet-making are children. Particularly in the Maharashtra area, in the case of powerlooms children are employed. An interesting article appeared in November. 1985 in the Indian Express which is worth quoting:

"The thousands of children who inhale cotton dust and fibres and acquire permanent health disabilities while working

Shri V. Gopalsamy]

The Child Labour

on the powerlooms in Bhiwandi, Maharashtra, are in the last analysis, labouring for the millionaire pedhi owners or the rich millowners of Bombay and Ahmedabad. Among the giants who get their cloth made in Bhiwandi are Garware, Raymonds, Bombay Dyeing, Mafatlal, Santogen, Fabina, Reliance (Vimal) Textiles and the Great Rajasthan Spinning Mills, according to top sources in the state government. An official of the textile department clarifies that the Khatau Mills were the first to get their cloth made in Bhiwandi. The powerloom owners in Bhiwandi confirm these facts and state that the Bhiwandi powerlooms thrive on the assured business from the big mills... The powerloom owners who undertake the assignments to manufacture cloth for the big business houses calculate that the latter save at least 30 per cent in costs by not manufacturing their products in their own mills where they would have pay legal wages and provide statutory facilities and protections to the workers. They certainly would not be able to employ children".

I would like to ask the Minister how many Labour Inspectors you could appoint and how you would strengthen the resolve of the Inspectors to file honest reports against the employers who save crores of rupees by employing child labour? It is not an easy task. You have notified the processes. But is it possible unless you totally ban it? What will happen now? Take the case of match factories and fireworks industry in Tamil Nadu. They are virtually slaves in the match factories. I come from the area. The children have to go before 3 O'clock in the morning. The Minister himself knows it. He has visited this area.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF LABOUR (SHRI P. A. SANGMA): Of course.

SHRI V. GOPALSAMY: Refore 3 O'clock in the morning. And they will come back only after 7 or 8 O'clock in the night. Before dawn they have to go to work. After the fall of dusk, they could return to their homes. They are virtually

slaves. Due to poverty, they have to go there. This is the country you have created after 40 years of Independence Millions of children ave to go to the factories and they have to work there for more than 15 hours.

SHRI P. A. SANGMA: What did you do when you were in power?

SHRIMATI MARGARET ALVA: Did the DMK Government ban it when it was in power?

SHRI V. GOPALSAMY: We tried.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF YOUTH AFFAIRS AND SPORTS AND WOMEN AND CHILD DEVELOPMENT IN THE MIN-ISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVE-LOPMENT (SHRIMATI MARGARET ALVA): No, none of you.

SHRI V. GOPALSAMY: You are asking me while you are running the affairs.

SHRIMATI MARGARET ALVA: We are not running your Government. Have you banned it?

SHRI V. GOPALSAMY: We have. We have tried to, with all means. We have tried, by all means. Madam, you say that because we had not taken any steps, your Government also has not taken any steps.

SHRIMATI MARGARET ALVA: That is why they are doing it.

SHRI V. GOPALSAMY: What steps have you taken?

SHRIMATI MARGARET ALVA: We have launched a whole programme for the children.

SHRI V. GOPALSAMY: You are now regularizing the exploitation. That is why you have brought this Bill.

#### SHRIMATI MARGARET ALVA: No.

SHRI V. GOPALSAMY: Then admit, "Yes, we have failed; because you had failed in the State, in India we have failed." You are admitting that. The Union Government has totally failed. What prosperity have you brought to this country? Now you say that because of poverty they have to go and work and that is why you are regularizing child labour.

Now, Sir. you are infringing the Fundamental Right guaranteed in the Constitution under article 21. Therefore, Sir, I oppose this Bill. I would request the Minister to apply his mind even at this moment and do away with the exemption which has been given to the schools run by the Government to employ the children even in the processes that have been banned. Thank you.

# ANNOUNCEMENT RE, STATEMENT TO BE MADE BY THE MINISTER OF STATE FOR HOME AFFAIRS

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): I have to inform honourable Members that Shri P. Chidambaram, Minister of State in the Ministry of Home Affairs, would make a statement in the House today at 4 p.m. on a query made yesterday during the discussion on the Calling Attention Notice regarding the security lapses at Rajghat on 2nd October, 1986.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (Assam): Sir, I have given my name.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): I will be calling you. We are not concluding the discussion. I just made an announcement.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRA-VARTY: I am corry.

# THE CHILD LABOUR (PROHIBITION AND REGULATION) BILL, 1986— contd.

SHRIMATI ELA RAMESH BHATT (Nominated): Mr. Vice-Charman, Sir. I deeply appreciate the good intention of the Ministry in bringing this Bill. However, with great regret I have to oppose this Bill.

I oppose this Bill because it is unconstitutional, because it is unreal, because it is inadequate, insufficient, incomplete because it touches only ten per cent of the children while more than eighty per cent of the children who are engaged in agriculture and who are rural are almost untouched by this Bill and also because it is against the development policies of the Government.

Sir, my first point is that article 24 forbids the employment of any child below 14 years in any factory or mine or other hazardous jobs. Art.cle 45, which is a Directive Principle, states that the State shall endeavour to provide, within a period of ten years, free and compulsory education for all children until they compiete the age of 14 years. We also have article 23, which comes under the heading "R'ght against Exploitation" prohibiting traffic in human beings and begar other similar forms of forced labour. In the well-known Asiad case, forced labour was interpreted to mean any labour offered for wages below the minimum wages. The logic of the judgment was that person would offer oneself for labour below the minimum wage unless forced by compulsion of economic circumstances. If this is true for adult workers, then is it not true for a child worker? "Child labour" by definition is forced labour and. therefore, it violates article 23. So, the Bill that we are discussing now is basically unconstitutional and it is also against the spirit of the Constitution. It also fails to fulfil the promises given by the Constitution. My second point is that the Bill has been watered down. It has watered down the definition of 'hazardous'. definition is inadequate. Only occupations and processes are listed in the Schedule. Industries like glass, brass and many others are not included in it. Moreover, the Constitution speaks of hazardous employment, while the Bill speaks hazardous processes, which is against the Constitution again, because it will allow a child to work inside a hazardous factory on the plea that the process in which the child is working is not hazardous.

The other watering down is, although the Constitution cays nothing of the kind,